पापा का पुकार

सुबह की हल्की धूप रोज़ापूर के सड़को पर फैली हुई है। रोज के जैसा माँ का पुकार शुरु हो गई है। "अरे पप्पू उठो" माँ का आवाज़ पड़ोस के घर में भी पहुँचेगा। माँ की पुकार से लेकिन मैं नहीं पापा हर दिन चौंककर नींद से उठती थी। आज भी ऐसा हुआ। लेकिन आज माँ मुझे ऐसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसने एक हल्की लकड़ी लेकर मेरे कमरे के दरवाजे पर ज़ोर से टकराकर कहा "क्या तुम खुद से जागोगा या मुझे तुम्हें इस कमरे के बाहर फेंकना पड़ेगा?"। माँ का डाँट सुनकर मैंने अचानक आँखों खोलकर खिड़की के बाहर देखा। मैंने सोचा कि बाहर कुछ नगड़ा हो रही है। आखिर माँ का क्रोध भरी चेहरे को देखकर मुझे पता लगा कि अब स्कूल जाने के लिए देर हो गई है। आज मेरे लिए एक साधारण दिन नहीं है। आज मेरा सपना पूरा करने का अंतिम अवसर

होगा। बचपन से ही पापा मुझे क्रिकट खेलना सिखाती थी। इसलिए बचपने सेमेरा सपना था एक अच्छा क्रिकट प्लेयर बनना। यह सिर्फ मेरा सपना ही नहीं थी क्रिकट मेरे पापा का अधूरा हो गये गए सपना भी थे। आज वो वक्त आ गई है। मेरे मन में आज सिर्फ वो मैदान का मौका थी।

पापा बाहर गाड़ी लेकर मेरा इंतज़ार कर रही है। मैंने खेल नष्ट होने के फिक्र से खाना नहीं खाया और जल्दी से कपड़ा पहनकर गाड़ी मे बैठा। गाड़ी चलना शुरू किया लेकिन अब भी माँ पीछे से मुझे डाँटती है। मैंने अनसुनी जैसा अभिनय किया। जब मैं स्कूल पहूँच गया तब सभी मेरी तलाश में थी। मैंने जल्दी मैदान पहूँच गया। प्रतियोगिता शुरू होने के लिए पाँच और मिनुट बाकी है। मैंने माच के पेहले कुछ व्यायाम करके कुछ सोचकर मैदान पर बैठा।

अब माच शुरू होनेवाली है। कोच ने मुझे कमरे में जाकर बाट और बॉल लेने के

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി തിയ്യതി.....

लिए कहा और मैं बेचैन से दौड़कर कमरे से चीज़ें लेकर वापस मैदान लौटा। अचानक से मैंने मैदान के बीच रुककर मेरे चार ओर ~~देखा~~ देखकर हैरान हो गया क्योंकि मेरे साथियों और कॉच सब मुझे कुछ भी भाव से देख रहे हैं। फिर कॉच ने मेरे निकट आकर कहा, "बेटा, तुम घर चलो जल्दी, तुम्हारी माँ तुम्हें इंतज़ार कर रही है"। "मैंने पूछा उससे "क्या मुझे यह सब छोड़कर चलना है? यह मेरा सपना ही नहीं मेरा आत्मा है"।" कॉच ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा " तुम जल्दी चलो, यह तुम्हारी जीवन से भी बड़ी है"।

मुझे उसके बात सुनकर पता चला कि कुछ बुरा तो होनेवाली है। मैंने बिना मन मैदान से बाहर चला। मैंने रिक्शा के सहारे घर ओर गया।

जब मैंने मेरा घर के आंगन पहुँचा, अचानक से एक पल के लिए मेरे दिल का तड़प थम गई और मुझे कुछ न दिख रहा था।

एक पल के बाद मैं साँस लेकर आगे चला और मैंने बिस्तर पर मर गई मेरे पापा को देखा। जब वह मुझे स्कूल छोड़कर वापस लौट रही थी उसको एक दुर्घटना हो गई। आस्पताल ले जाने से पेहले ही मर चुका था। माँ के होश चली गई और उसे भी कमरे में लेकर गई है। जब मैंने कमरे में गया माँ अब उठकर चार और चलती रही कुछ बोलकर।

मुझे कुछ समझ नही आ रही थी कि मुझे क्या करना है। अपनी पापा का चेहरा और माँ का हालत सब देखकर मेरे मन दर्द और दुख से भरकर मुझे कुछ सुन या देख न सकती थी। मैंने अचानक घर से बाहर चला और सड़क किनारे तेज से चलना शुरू किया।

मेरी मन में कुछ अजीब सा लग रहा था। पता नही मेरा आँखों के सामने सिर्फ पापा के साथ क्रिकट खेलने का दृश्य तैर रही थी।

मेरे अंदर से अचानक पापा का पुकार सुनने लगा। मैंने सोचा यह मेरा ही नहीं पापा का भी सपना है। मुझे उनके लिए आज प्रतियोगिता जीतना होगा।

मैंने बिना कुछ सोचकर मैदान में पहुँच गया। अब प्रतियोगिता का आखिरी खेल होनीवाली है। मैंने कोच के पास जाकर उनका हाथ पकड़कर कहा "हारना मेरे लिए मंजूर नहीं है, मुझे पापा के लिए जीतना है"। उनको मुझपर पूरा विश्वास थी। उसने मुझे खेलने के लिए अवसर दिया। मैंने अपनी बेचैन और दुख से भरी मन से अपने पापा के साथ खेलने के यादों से खेलना शुरु किया। खेलते वक्त मे मुझे पापा का पुकार और अस्तित्व महसूस किया। मुझे कहीं से जीतने का ताकत मिला। मैंने वह प्रतियोगिता में जीत गई।

सभी खेल के बाद अपनी सफलता को मना करने के लिए नाचती हैं। लेकिन मेरा मन इस संतोष और आह्लाद भरी

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിരുത്തി.................... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

हाल में भी सूखा-रूखा रहा। मेरा मन जब पापा के विदा से टूटा है तब भी एक सुकून है कि मैंने उनका अधूरा सपने को पूरा किया है।

माँ और मुझे छोड़कर पापा तो इस दुनिया से चली गई लेकिन उनकी यादें मेरी मन में हरा रहेगी हर पल। अगर मैं यह प्रतियोगिता दुःख से नष्ट किया तो मेरी पापा की सपना अधूरा ही रहेगा।